ॐ पिताश्री 23/4/62

ओमशान्ति। आज टेप में मुरली भरनी थी; परन्तु टेप है नहीं। जहाँ टेप भेजा जाता है उन्हों को यह ख्याल नहीं रहता है कि वापिस भेजे; क्योंकि इनसे बहुतों का कल्याण होना है। बहुत सुनेंगे। गफलत में रख देते हैं या इतना ख्याल नहीं ही रहता है। यह है अविनाशी ज्ञान रत्न। इनसे मनुष्य 21 जन्म लिए सदा सुखी, सदा पवित्र, सदा शान्ति बनते हैं। मनुष्य शान्ति और सुख ही चाहते हैं। सुख के लिए धन कमाते हैं। शान्ति के लिए धक्के खाते हैं सन्यासियों के पिछाड़ी; परन्तु चीज़ मिलती नहीं। मनुष्य जानते ही नहीं सुख–शान्ति दुनिया में कब होता है। अब यह सुख सभी को कैसे पहुँचावें? हम तो साहुकार होते जाते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। हम जो कमाई करते हैं वो दुनिया में बिल्कुल कोई नहीं कर सकते। मनुष्यों को पैसे जास्ती होते हैं तो पत्रों पर नाचते हैं। हमारी कोई बाहर की फलक नहीं है। हमारी कमाई कितनी भारी है। फलक कुछ भी नहीं। फलक को तो हम दबाते रहते हैं; क्योंकि हमको बेगर टू प्रिन्स बनना है। कितना साधारण रीति बात–चीत करते हैं। सर्विस करने का दिल में बहुत उमंग रहता है। यह भी जानते हैं कल्प पहले वाले ही आकर बाप से वर्सा लेंगे। जिनकी तकदीर होगी वो ही तदवीर करने आवेंगे। इनके लिए प्रब..... भी रचना है। मनुष्य बिल्कुल तुच्छ बुद्धि हैं। माया ने एकदम बन्दर बनाय दिया है। अब फिर उस माया पर बाबा जीत पहनवाते हैं। बाकी और कोई बात नहीं है। मनुष्य ही उल्लू बुद्धि बन गए हैं तो युक्तियाँ रचनी चाहिए कैसे उल्लू से ..... बने। सतयुग में देवी–देवताएँ बहुत मीठे थे। उनकी कितनी महिमा गाई जाती है। मनुष्य नहीं जानते। उनसे पूछो भारत में कब सदा सुख था? कहते दुनिया होती ही दुख के रूप में है। अपन जानते हैं

(पाँच लाइन मिटी हुई हैं।) .....

.....

.....

.....

.....

..... को जानते हैं। दिलवाड़ा मंदिर में कौन विराजमान है। भगवान कौन है। उनको ..... कहा जाता है? क्या श्री ल॰ भी अम्बा है। वो तो अम्बा हो न सके। ल॰ना॰ को उनके बच्चे ही माँ–बा(प) कहेंगे। यह जगदम्बा कौन है उनका भी आक्यूपेशन समझाना पड़े। लक्ष्मी को तो ..... पूजते हैं पैसे के लिए। जगदम्बा को लक्ष्मी नहीं कहेंगे, न ल॰ को जगदम्बा कहेंगे। आदिदेव क्या करके गया। उनको प्रजा का पति ब्रह्मा क्यों कहा जाता है, प्रजा कैसे रची। यह सब तुम जानते हो। मनुष्य तो बिल्कुल नहीं जानते। झुण्ड के झुण्ड आते हैं। कोई किस मत के, कोई किस मत के। तो समझाना भी मुश्किल हो जाता है। (कल अंधपुर से 25 की पार्टी आई थी जिसमें मेल–फीमेल दोनों थे।) अपन जानते हैं बरोबर कौरव कौआ हैं। सिर्फ अपनी काऊ2 करते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं जानते। यहाँ तो तुम हो ज्ञान की बुलबुलया। सारा दिन विचार–सागर–मंथन चलता रहता है। अम्बा जी पर भी जाकर भाषण करना चाहिए। जगदम्बा है .....। वहाँ बड़ा भारी मेला लगता है। समझाना है हम तो उनके बापदादा को भी जानते हैं। 84 जन्मों को जानते हैं। तुम तो एक जन्म को भी नहीं जानते हो। दिल होती है वहाँ जाय सर्विस करें; परन्तु माँ–बाप तो जाय नहीं सकते। यह लक्की सितारों का काम है। इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। जगदम्बा के लिए भी लिखना चाहिए जगदम्बा कौन थी, कब आई, कितने जन्म कौन–से लिए। अभी तपस्या कर रही है। फिर उसने भविष्य में कैसा पद पाया। दिलवाला का भी लिख रहे हैं। यहाँ तो बहुत आते हैं। इसलिए बाबा दिलवाला के ऊपर किताब बनवा रहे हैं। दिन–प्रतिदिन प्वाइंट्स पड़ती जाती है। गीता में तो सिर्फ 18 अध्याय ही चलते रहते। चेंज कुछ भी नहीं कर सकते। गीता भागवत आदि में कुछ भी है नहीं। चरित्र की तो कहाँ बात ही नहीं। बाकी तुम जानते हो हू इज़ हू। शिवबाबा कौन है। शिवबाबा के तो 84 जन्म नहीं कहेंगे। उनका एक ही जन्म का पार्ट है। फिर भक्तिमार्ग में कैसे सेवा करते हैं वो भी बतलाते हैं। ज्ञान लेकर फिर कहाँ जाकर रहते हैं। हमारे अन्दर सारा बखर भरा हुआ है। बखर भर जाता है तो फिर डिलेवरी करने जाते हैं ना। हमको भी जाना है। जो2 होशियार बच्चे हैं उनको बाबा चैलेंज करते हैं। थोड़ी2 सर्विस में क्या रखा है। सर्विस की बहुत फलक चाहिए। मंदिरों में जाय हरेक का आक्यूपेशन सिद्ध कर बताना है। यह तो बच्चे ही जानते हैं। बाबा तो दिल दे चले जाते हैं। जैसे लौकिक बाप बच्चों को वर्सा देकर चले जाते हैं। वो तो जाय पुनर्जन्म लेते हैं। हमारा बाबा हमको वर्सा दे फिर कहाँ जाता है? यह तो विचार–सागर–मंथन चलता है ना। मनुष्यों को कैसे समझावें। बाबा का ख्याल चलता था लाइब्रेरी तो यहाँ होनी चाहिए जहाँ हम बैठे हैं। कोई को पता ही नहीं है यहाँ का। दिलवाला मंदिर में भी लाइब्रेरी खोलनी है। खर्चे की तो कोई परवाह है नहीं। शिवबाबा कम थोड़े ही है। मनुष्य बिचारे बहुत दुःखी हैं उनको रास्ता बताना है। जो भी सुख मिलता है तो नाक से पकड़ ..... से दुबन में डाल देता है। ..... बन पड़ते। क्या2 बैठ बतलाते हैं। कल्प इतने ..... का है। हमारे पास तो ..... कितने अच्छे हैं।

अब तुम बच्चों को मालूम है यहाँ दुकान लिया हुआ है। बाबा ने कहा है वहाँ लाइब्रेरी खोलो। दिलवाला में भी खोलो। तीसरी भी एकान्त के जगह पर खोलो। आबू में तो 3/4 लाइब्रेरियाँ लगा दो। दिल्ली में देखो कितने दुकान हैं। यहाँ भी दो/चार दुकान चाहिए। खर्चे का हर्जा नहीं है। दुकान में आए मनुष्य ऐसा सौदा लेंगे जो भविष्य सदा सुखी बन जावेंगे। यह है अविनाशी ज्ञान रत्नों का हट्टी। बी.के. की हट्टी है। जिसे मनुष्य आए भविष्य के लिए इतनी ऊँच कमाई कर जो उनके पुत्र–पौत्रे तर–पौत्रे चलते चलेंगे। हम बाप बनेंगे फिर पुत्र पर पौत्रे, तर पौत्रे बनेंगे ना। नम... कितना है। 21 जन्म। जन्म व जन्म हम इस मिल्कियत को खाते रहेंगे। कितनी बड़ी मिल्कियत है। बाबा तो है वण्डरफुल अफ़लातून कहते हैं। धामधूम से लाइब्रेरी खोलना है। वहाँ चित्र बोर्ड आदि से खूब सजाओ जो मनुष्य समझें यह तो बड़ी वण्डरफुल चीज़ है। यहाँ तो स्वर्ग के लिए पूरा खज़ाना मिलता है। स्वर्ग का मालिक बनना होता है। बाबा कितनी युक्तियाँ बतलाते हैं। दिलवाला है नम्बरवन मंदिर। हमारे ही यादगार का बना हुआ है। हम उनका पूरा ऑक्यूपेशन बता सकते हैं। ऊँच ते ऊँच है शिवबाबा। ऊँचे को ही क्रियेटर कहेंगे। एक ही पढ़ाई से कोई सूर्यवंशी बन जाते कोई कम पढ़ते तो चंद्रवंशी। कोई गरीब, कोई साहुकार बनते हैं। नम्बरवार तो बनते हैं। अब जैसे हमको ज्ञान है, दूसरों को भी देना है। इसमें समझाने वाला बहुत अच्छा चाहिए। दुकान में सब चित्र आदि रख देंगे। फर्स्ट क्लास दुकान होगा। बाबा तो है ही जादूगर। बैठे2 जादूगरी का काम करते हैं। रतना गरनी है। कैसे अच्छे रत्न देते हैं। मनुष्यों ने झूठी गीता को कितना ऊँच रख दिया है। जिस गीता से हम बिल्कुल झूठे बन पड़े। झूठखण्ड के मालिक बन पड़े। अब इस सच्ची गीता से हम सच खण्ड के मालिक बनते हैं। बुद्धि में कितनी मगरूरी रहनी चाहिए। सर्विस का नशा बहुत होना चाहिए। सबसे अच्छा यह धर्म का काम है। यथा राजा धर्मात्मा तथा प्रजा। सतयुग में थे ही धर्मात्मा राजे–राणी। यहाँ तो सभी पापात्मा हैं। तो वहाँ लाइब्रेरी में बैठकर सर्विस करनी है। यहाँ से समझ कर फिर वहाँ जाय समझाना है। बहुत आवेंगे। धीरे2 तुम्हारा नाम बाला हो जावेगा। नॉलेज तो बिल्कुल क्लीयर है जब दुकान निकाले तब तो मालूम पड़े। यहाँ शुरू करना है। बाबा कहते हैं जैसे कर्म तुम करेंगे तुमको देख और करने लगेंगे। उन चित्रों की तो फर्स्ट क्लास सजावट है। बी.के. नम्बरवन जाकर महूरत करेंगी दुकान का। हम वहाँ बहुत अच्छे2 रखेंगे। बहुत महिमा करवाते हैं। किताब भी दिलवाला का अच्छा करके बनावेंगे। बाबा ने कहा तुम समझते हो दुकान लेते हैं धंधा–धोरी करेंगे; परन्तु नहीं, हमारा है यह फर्स्ट क्लास धंधा। लाइब्रेरी ऐसी जगह होनी चाहिए जो बाग–बगीचा हो, मनुष्य आए समझे। अम्बा जी पर भी बहुत लोग आते ही रहते हैं। कोई को ..... न पैदा होता होगा, कोई बीमार होंगे तो जावेंगे अम्बा के पास। माँ शफ़ा देती है सदैव के लिए अमरभव। 21 जन्मों लिए तुमको काल नहीं खावेगा। एक पुराना शरीर छोड़ दूसरा नया शरीर लेते रहेंगे खुशी से। नई चीज़ हमेशा सभी पसन्द करते हैं। इसलिए कहा जाता है हम .... काल पर भी जीत पहनते हैं। हम लिख भी सकते हैं अकाले मृत्यु कब न हो ऐसी शिक्षा यहाँ मिलती है। और गरीब तो हैं ही। 100 गरीब में एक साहुकार मिलता है। उसमें भी नम्बरवार होंगे। हम साक्षी हो देखते हैं। सर्विस का कितना किसको शौक है, कितना विचार–सागर–मंथन कर सर्विस को ..... है

(पाँच लाइन मिटी हुई हैं।).....

.....

.....

.....

.....

.....डीप जावेगा तब पानी निकलेगा। जितना डीप जावेगा उतना पानी फर्स्ट क्लास निकलेगा। दो/तीन हज़ार खर्चा हुआ तो हर्जा नहीं। पानी बहुत मिलेगी। आगे घी की नदियाँ थी। यहाँ तो देखो पानी के लिए पैसा देना पड़ता। मीटर लगा रहे हैं। कहते हैं मैं धोबी हूँ, खर्चा की परवाह नहीं। हमारे घर से गई है। सिर्फ सच्ची दिल से सर्विस करते रहो। गफलत मत करो। विचार–सागर–मंथर बिगर इनवेन्शन नहीं निकल सकती। प्वाइंट्स को अच्छी रीत विस्तार में ले आना है। बाबा कहते हैं विचार–सागर–मंथन कर सर्विस में लगते जाओ। थक मत जाओ। अच्छा। आज मकान का फाउण्डेशन डालना है। सभी का मुख मीठा कराय देंगे। ... .पात्रों, आज मकान का फाउंडेशन माँ–बा ने अपने होली हस्तों से डाला है। नारि..... वहाँ से फूल और पानी छांटा गया। फिर माँ–बा और लक्की सितारों ने खोदने का फाउंडेशन डाला। फिर मजूरों सहित सभी का मुख मीठा कराया गया। ॐ